रिपोर्ट

नाम: निधी आ सोलयेकर

रोल नंबर: 19

यात्रा की तैयारी

इसी वर्ष भ्रमण पेपर सिलेबस में डाला गया और हमे बताया कि हम किसी एक जगह घुमने जायेंगे। पेहला सेमीस्टर खत्म हो गया नया वाला शुरु हो गया पंरतु इस पेपर के बारे मे कोई नहीं कर रहा। हमे लगा इस साल तो नहीं जाएगो परंतु हमे बताया हम बनारस जाने वाले है। ISA भी थी हमारी इसी बीच पढाई में मन नहीं लग रहा था।

सभी कौनसा बैग और क्या-क्या लेकर जाएगो इसके बारे में चर्चा कर रहे थे। कोई गट किये थे उसमे अपने बैग का फोटो भेज रहे थे और आते वक्त अपने साथ क्या लेकर आना है इसकी एक लंबी सूची बना दि थी। पर मैं सब कुछ नहीं लेकर गयी थी जो मेरी जरुरत है उसके हिसाब से सब कुछ बैग मे रखा था।

उसके एक दिन पहले मैंने जो कुछ खाने का सामान था खुद जाकर लेकर आयी थी। ट्रेन में टाइप पास के वक्त। जिन्दगी में पहली बार इतना सारा सामान लेकर जाने वाली थी वो भी बिना घरवालों के साथ। उस रात तो मुझे नींद नहीं आयी।

सफर की शुरुआत

उस दिन सुबह जल्दी उठकर में अपना सामान लेकर 8 बजे घर से निकली। माशेल से बस में बैठकर साखली चली और वहाँ से सीधा बिचोली पहुँच गयी। मेरी सहेली को मैंने फोन किया और बताया मे बस स्थान पर पहुंच गयी। में उनके साथ गाडी मे आ गयी। उसके पहले हम चर्चा कर रहे थे क्या-क्या लिया है।

जब स्टेशन पर पहुंच गये तो मुझे याद आया मेने तो ताला लिया ही नहीं। उसके बाद स्टेशन से मैंने ताला ले लिया। उसके पहले सभी एक-एक करके आ रहे थे। सभी खुशियों से चहक रहे थे। मेरे सहेली के पिताजी शिक्षिका से पेन के बारे में जानने के लिए गये थे और उसकी बहन हमसे बाते कर रही थी। उससे पहले सर ने सीट नंबर भेजे थे।

10 बजे हमारी ट्रेन आ गयी और हम निकल पडें बनारस। सभी ने अपने बैग ठिकाने तरह से रखकर अंताक्षरी खेलना निश्चय बनाया। इसी बीच गाने और मौज मस्ती के बाद दोपहर का पता भी ना चला। खाना खाने के बाद सभी सो गये। शाम के 6 बजे फिर से वही मस्ती का माहौल परंतु ट्रेन के लोग 7 बजे ही सोना जाते है। यह हमें आदत नहीं थी परंतु यह मेरा पेहला मौका था इसके पहले कभी ट्रेन में सफर नही किया था। पर हम सभी एक कपाटमेट से दुसरे कपाटमेट मे जाते रहे। एक दुसरे के साथ गपशप करनें के व्यस्त थे। इसी बीच आज का दिन समाप्त हो गया ।

ट्रेन में सफर का दुसरा दिन:

ट्रेन में चारों और शुरू सुनाई दे रहा था। जब उठकर समय देखा तो सुबह के पाँच बजे थे इतनी सुबह जग ने कि आदत नहीं थी सिवाय परीक्षा के दिनों में परंतु ट्रेन की छोर की वजह

से नींद जल्दी ही खुल गई।उठने के बाद तैयार हो गये एक कपाटमेट से दूसरे कपाटमेट में चाय और समोसे वालों कि आवाजें आ रही थी। ट्रेन से हमारी पहली सफारी होने के कारण यह देखकर हमें आश्चर्य हो रहा था कि इतनी जल्दी यहा सब कुछ मिल सकता है। बैठे-बैठे उब गये थे वो भी आज दुसरा दिन ट्रेन में इसकी आदत जिन्दगी में नहीं थी । इसलिए हम अपने दोस्तों को सुप्रभात कहेने के चले गये उनसे थोडी देर गपशप करनें के बाद वापस अपनी जगह लौट आये और थोडी देर में चाय और समोसे का आनंद उठाने में व्यस्त लगो। उस दिन भी हमारा दिन अंताक्षरी से आगे कि तरफ बढने लगा। दुसरा दिन होने कि वजह से हम सभी ने ट्रेन की रसोईघर से खाने का इंतजाम करवाया तो उस दिन हमने चिकन बरियाणि का गुजारा कराया था। खाने के बाद सभी ने नींद कि चुस्की ले लि। शाम का समय भी हमारा उसी तरह से गुजर गया अंताक्षरी के साथ। हमें बताया गया कि हमें कुछ देर बाद कुर्ला स्टेशन पर उतरना है। सभी ने अपने-अपने सामान कि पैकिंग में जुट गए । सामान पैकिंग होने के बाद सभी आराम से बैठे थे। हमें बताया गया कि हम मुंबई पहुँच गए ट्रेन से हम बाहर का नजारा देख रहें थे।

8 बजे हम कुर्ला स्टेशन पहुंच गये। उससे पहले हम सभी पेल्टफोम खोज रहे थे । मुंबई के लोकल ट्रेन से हम चढा तभी पता चला कि हमारी शिक्षिका और एक विद्यार्थी गण वही पर रह गये और एक को चलती हुए ट्रेन से खींचकर अंदर की तरफ ले लिया था । 1मिनट का समय था ऐसा लगा पता नहीं लोग कैसे सफर करते हुगो इस ट्रेन में उनको आदत हो गयी होगी। हमें सभी ट्रेन में उनके बारे में चर्चा कर रहें थे। तभी एक महिला ने बताया कि वो दोनो अगली ट्रेन से आ जाएँगे। उस दौरान वह हमसे अच्छी तरह से वार्तालाप कर रही थी जैसे ही स्टेशन आता चला गया उसके बोलने का ढंग बदल सा गया । हमने उन्हें समझाया कि जरा रुकिये हम भी उसी स्टेशन पर उतरेगे । हम सभी स्टेशन आते ही तुरंत नीचे उतर गये और उन दोनो का इंतजार करने लगे । फिर शिक्षक और छात्र दोनो एक साथ आ गये। तो हम सभी अपना-अपना सामान उठाकर फिर से चल पडें विश्राम कक्ष की और पहले तो हमें स्थानीय विश्राम कक्ष की ओर लेकर गयें थे परंतु वहां के माहौल और लोगों को देखकर कुछ देर बैठकर वापस चलें गये। दूसरे विश्राम कक्ष की ओर सामान को लेकर चलते-चलते पसीना छुट गया,पर हम वहाँ पहुँच गये साफ सुथरा था उस विश्राम कक्ष का नाम था लोकमान्य तिलक टर्मिनल स्टेशन पर प्रतिशालय में हम चेहरे हुए थे। साफ सुथरा और बैठने के लिए अच्छी सुविधा थी,परंतु सोने से सक्त मनायी अगर गलति से सो गया तो दडे से उनको फटका दिया जाता था, वो इसलिए करते थे क्योंकि अपनी सामान की रखवाली खुद को करनी है अगर कुछ चोरी हो भी गया तो उनकी जिम्मेदारी नहीं थी। सोने से मनायी थी और नींद आ रही इसी बीच हमने गाना सुनते,बाते करके पुरा वक्त बिताया परंतु समय आगे नहीं बंध रहा था मानो ठहर सा गया था। इस दौरान हमें पता चला कि किस तरह लोग ट्रेन के लिए इंतजार करते है। इस बीच सुबह के 4 बजे हम ताजा होने के लिए गये। रात से सबेरे हो गया था,और हमारी ट्रेन दोपहर के 2 बजे आने वाली है इस बीच और बहुत समय बच्चा था तो सुबह हमने वही पर चाय नाश्ता करने स्टेशन के चक्कर काटने लगे ।इस तरह से सुबह का आगमन हुआ । इस तरह समय बिताकर कामायनि ट्रेन से चल पडें अपने सफर पर ।

कामायनि ट्रेन से वाराणसी का सफर

2 बजे हम कामायनि ट्रेन का इंतजार कर रहे थे तभी एक ट्रेन आयी पहले तो बताया था कि वह ट्रेन नहीं है, पर वही ट्रेन निकली फिर तो हम उसपर तुट पडें। सीट मिलने पर हम आराम से सामान रखकर बैठ गये रात को नींद पुरी नहीं होने कारण में तो सो गयी। उठने के बाद हम चाय कि राह देख रहे पर उसमें सिर्फ चने ही आ रहे थे। फिर कुछ देर बाद चाय मिल गयी। हमने एक स्टेशन पर खाना ले लिया था । दुसरे दिन हम 8:30 बजे वाराणसी स्टेशन पहुंचे वहां पहुंचकर हमने राहत कि साँस ले ली । वहाँ से होटल जाने के लिए गाडिय़ों का इंतजाम किया था। हम हॉटेल की तरफ बढ रहें थे तभी तीन बारात जा रही थी। वह दृश्य हमारे लिए अद्भुत था क्योंकि हमने एसी बारात नही देखी थी। उसके साथ-साथ एक मुस्लिम का जनाजा लेकर जा रहे थे।

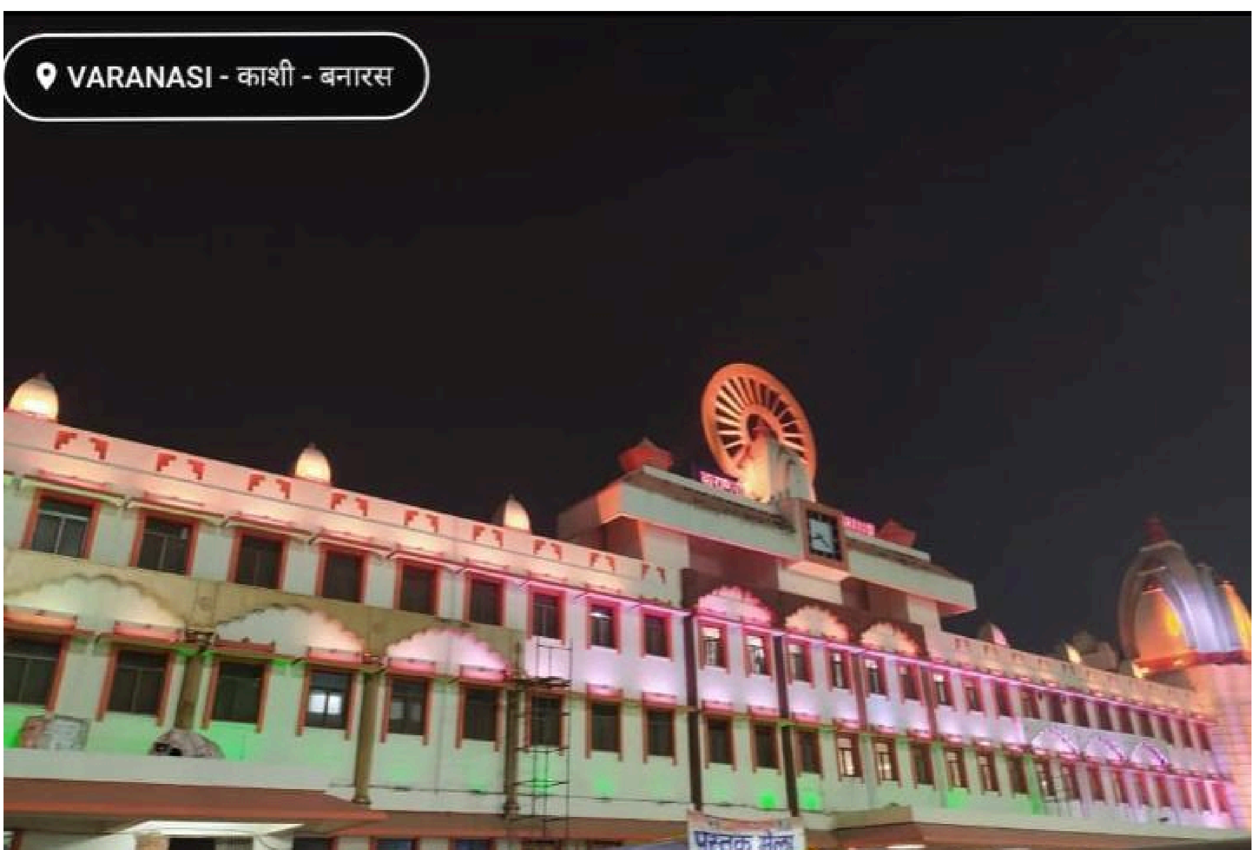

हम हॉटेल के रास्ते पर पहुंच गये हमें वही उतारा गया क्योंकि गाडिय़ा अंदर की तरफ नहीं जा सकती थी ,हम सब जलकर ही चले गये। हमारा सामान हॉटेल के लोग लाने वाले थे वहाँ पहुँचकर एक लीडर बनाकर तीन लोगों को एक साथ रहने के लिए कहां।

जब हमने कमरा खुला तो बहुत ही शानदार था। फिर हमारा सामान आने के बाद हम स्नान करके खाने का इंतजार कर रहे थे। फिर खाना खाके हम सोने के लिए गये।

बनारस की पहली सुबह

तीन दिनों की सफर से आज नींद ठीक तरह से हो गयी। आज हमारी सुबह की आँख खुली बनारस की होटल में ,तिन दिनों में दो राते ट्रेन में और तीसरी रात सामान कि रखवाली करने में चली गयी। मेरी सहेलियां सोयी थी । में उठी और नहा- धोकर तैयार हो गयी। चाय नाश्ता होने के बाद हमें बुलावा आ गया कि आज हम घुमने BHU जायेंगे । सभी के आने के बाद हम BHU की तरफ निकल गये। हम बनारस की गलियों से निकलकर BHU के प्रवेश पर पहुंच गये। वहां कुछ देर खडे रहकर अंदर की तरफ चले गयें ।

हमें यह ज्ञात नहीं था कि BHU इतना बढा है। सभी डिपॉर्ट्मेन्ट एक ही जगह पर थी। हम चले जा रहे थे परंतु उनका डिपॉर्ट्मेन्ट खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। हर जगह देखने के लिए पहले वहाँ के लोगों से इजाजत लेनी पड़ती है। हमने वहां के छात्रों को देखा केसै वह अपने शिक्षकों का पाँव छूकर आर्शिवाद लेते है। किस तरह ज्यादा से ज्यादा छात्र मोटे-मोटे किताबों को वहां के बगीचे में पढ़ते हैं । वहां के हिन्दी प्रोफेसर ने हमें अपने और BHU के बारे में जानकारी दे दि। हम सभी BHU के क कक्षा में बैठकर उनकी बातों को सुन रहे थे। बाद में हम वहाँ के पुस्तकालय में चलें गए जो बहुत बडी और विशाल थी। हम उनकी आज्ञा से अंदर कि तरफ देखने चले गए। वहाँ का हिन्दी डिपार्टमेन्ट की पुस्तकालय बहुत अच्छी थी। हमें वहाँ घर किस्म की किताबें देखी जो हमें चाहिए थी अपना स्वाध्याय पूरा करने में और इसके अलावा और भी एक पुस्तक देखा वहां पर भी रीसर्च के वहां फ़ोल्डर रखें हुए थे। हमारे कुछ छात्र ने वहां के किताबों से कुछ तस्वीरें लेने कि कोशिश कर रहे थे परंतु वहां के पुस्तकालय के कर्मचारियों ने तस्वीरें लेने से मना कर दिया। इसके दौरान हम खाना खाने के बाद वहां के मंदिर चले गए और फिर BHU में आ गए। शाम का समय खत्म होने के कारण हम भवन नहीं देख पाए । वहाँ के अलग–अलग डिपार्टमेन्ट देखने के लिए हम फिर से

चल पडें। हमें पता चला कि किताबों का प्रदर्शनी देखने चले गये और वहाँ से बहुत सारे किताबों अपने साथ लाये थे हर एक ने 3–4 से भी अधिक लेकर आए थे। BHU देखते-देखते कब सुबह से रात आ गयी पता नहीं जाला परंतु जल–जल के पाँव दर्द करने लगे थे और अब परों में हिमत नही बची थी। कैसे करके हॉटेल तक पहुंच गये। सर ने तभी बताया कि हम गंगा घाट पर जा रहे हैं, परंतु किस कारण वर्ष वह वहां नही जा सके। परंतु हमारी एक सहेली गयी थी पर वहां जाने से कुछ लाभ नहीं हुआ उस दौरान सब कुछ समाप्त हो गया था । आते वक्त उसने हमारे लिए चाउमीन और भाजी पाव लेकर आ गयी थी। पैरों में दर्द सुनें के कारण में खाना खाके जल्दी सो गयी वो दोनो बैठकर बात कर रही थी पर में नींद की चुस्कियां लेने लगी। इस तरह से पेहला दिन बीत गया बनारस की गलियों के साहारे।

कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
FACULTY OF ARTS
BANARAS HINDU UNIVERSITY

BANARAS HANDICRAFT CORPORATION

हिन्दी विभाग
कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
DEPARTMENT OF HINDI
FACULTY OF ARTS

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
GAEKWAD LIBRARY
CENTRAL LIBRARY

BHARAT KALA BHAVAN
Vivo V9Youth
16MP AI Selfie

बनारस की सुबह का दुसरा दिन

हमें बताया गया कि आज हम चार जगहों पर घुमने जायेंगे सारनाथ,लहमि,लहराता और घाट वहां पर जाने के लिए गाडियों का इंतजाम करवाया था । तो हमारे गट बनायें गए गाड़ियों में बैठने के लिए। हम जल पडें सारनाथ की ओर।

सारनाथ

सारनाथ उत्तर प्रदेश राज्य में बौद्ध तीर्थयात्रा के लिए एक बहुत ही पवित्र स्थल है। सारनाथ राज्य की घनी आबादी के बीच एक शांत और आध्यात्मिक शहर है जो कई बौद्ध स्तूपों, संग्रहालयों, प्राचीन स्थलों और खूबसूरत मंदिरों के साथ ऐतिहासिक शहर है। वाराणसी से सिर्फ 10 किलोमीटर दूर होने के कारण सारनाथ हमेशा भक्तों से भरा रहता है। बता दें यह शहर बौद्ध, जैन और हिंदुओं के लिए एक आदर्श तीर्थ स्थल है। सारनाथ बौद्धों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान है जो विभिन्न ऐतिहासिक मंदिरों, वास्तु चमत्कारों के साथ पूरी तरह से शांत नज़र आता है। यह वो जगह है जहाँ भगवान बुद्ध ने अपने पहले धर्मोपदेश का प्रचार किया, सारनाथ एक तीर्थस्थल होने के साथ ही लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण रहा है और यह अपने सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ रहस्यों के लिए भी जाना जाता है।

सारनाथ का इतिहास- Sarnath History

जैसा कि हम आज जानते हैं कि बौद्ध धर्म को दुनिया के 400 मिलियन से अधिक अनुयायियों के साथ कई देशों में इसका अनुसरण किया जाता है लेकिन फिर भी यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि सारनाथ बोधगया में एक जगह है जिसे हिरण पार्क कहा जाता है जहां बुद्ध आए थे। यहाँ के बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त करने के बाद बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। बता दें कि सारनाथ का नाम सारंगनाथ या हिरण भगवान से लिया गया है और इसलिए यह स्थान का नाम सारनाथ रखा गया है। तब से यह स्थान बौद्ध सर्किट में चार प्रमुख स्थलों का हिस्सा बन गया है। सारनाथ एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल भी है क्योंकि यह जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्मस्थान है। यहाँ पर श्रेयांसनाथ समर्पित एक मंदिर है।

सारनाथ को 3 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से ऐतिहासिक उथल-पुथल की एक श्रृंखला से गुज़रना पड़ा था, लेकिन जब सम्राट अशोक ने इस स्थान पर विशेष रुचि ली और विशालकाय स्तूपों जैसे शानदार ढांचे का निर्माण किया तो इस जगह का आकर्षण बढ़ा।

10 वीं से 12 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में जब विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा लंबे समय तक एक से बाद एकआक्रमण किये तो आधुनिक उत्तर प्रदेश के कई शहर खत्म हो गए थे और सारनाथ को टुकड़ों में छोड़ दिया।

19 वीं शताब्दी के मध्य में सारनाथ को कुछ ब्रिटिश पुरातत्वविदों द्वारा इसके ऐतिहासिक महत्त्व के चलते फिर से संरक्षित किया गया और बौद्ध धर्म के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक का स्थान सारनाथ ने फिर से प्राप्त किया।

सारनाथ में कई मंदिर, मठ, संग्रहालय, उद्यान – यहां के प्रमुख आकर्षण हैं जो बौद्ध धर्म और उसके इतिहास को समर्पित हैं, और चौखंडी स्तूप हर साल कई पर्यटकों को आकर्षित करने वाले सबसे प्रमुख लोगों में से एक है।

बुद्ध पूर्णिमा सारनाथ- Buddha Purnima Sarnath

बुद्ध पूर्णिमा को गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान और मोक्ष के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस खास मौके पर अधिकांश बौद्ध स्थलों हर साल समारोह आयोजित किए जाते हैं और दुनिया भर के तीर्थयात्री सारनाथ की यात्रा के लिए इस समय आते है। यह त्यौहार पूर्णिमा की रात को पड़ता है, इसलिए भारत में इस त्योहार को बुद्ध पूर्णिमा कहते हैं। इस पवित्र त्यौहार के दिन गरीबों लोगों के लिए मुफ्त चिकित्सा शिविर के साथ-साथ दिन भर की प्रार्थनाएँ आयोजित की जाती हैं। शाम के समय बोधि वृक्ष और यहां के कई महत्वपूर्ण स्थानों पर दीपक जलाए जाते हैं और भक्तों द्वारा बुद्ध की मूर्ति को पानी और फूलों से भरे बेसिन में रखा जाता है। कई शाकाहारी व्यंजनों, मबत्तियों, फूलों, भजनों और प्रसाद के साथ बुद्ध पूर्णिमा के इस शुभ दिन को बहुत धूम-धाम से मनाया जाता

थाई मंदिर सारनाथ – Thai Temple Sarnath

थाई मंदिर सारनाथ में एक प्रसिद्ध आकर्षण जो यहां की वास्तुकला की शैली को प्रदर्शित करता है। बता दें कि यह मंदिर सुंदर बगीचों के बीच बना हुआ है, जो यहां आने वाले पर्यटकों और तीर्थयात्रियो के आकर्षण का केंद्र है यहां पर बौद्ध भिक्षुओं द्वारा शांत और शांतिपूर्ण प्रदान किया जाता है।

अशोक स्तंभ सारनाथ- Ashoka Pillar Sarnath

अशोक स्तंभ, भारत का राष्ट्रीय प्रतीक और सम्राट अशोक की सारनाथ की यात्रा का एक प्रतीक है पत्थर से निर्मित अशोक स्तंभ एक प्रभावशाली संरचना है जिसके शीर्ष पर चार शेर हैं। धम्मेक स्तूप के साथ यह 50 मीटर लंबा स्तंभ अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के लिए का उपहार है। अशोक स्तंभ के परिसर में आप कई भिक्षुओं को ध्यान करते हुए देख सकते हैं पूरा परिसर हरे-भरे लॉन से भरा हुआ है जो यहां आने वाले पर्यटकों को बेहद आकर्षित करता है। बता दें कि भारत का सबसे पुराना पुरातात्विक संग्रहालय इस परिसर की परिधि में बनाया गया है। यहाँ स्थित धम्मेक स्तूप बौद्धों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है, यहाँ पर भगवान बुद्ध ने पहली बार अपने पाठों का प्रचार किया

इसके अलावा और भी वस्तुओं, है जो अपनी तरफ सभी को आकर्षित कर रही थी। यहां का माहौल कुछ अलग ही था । हर जगह खामोशी फेलि थी इतना सुन्दर वातावरण

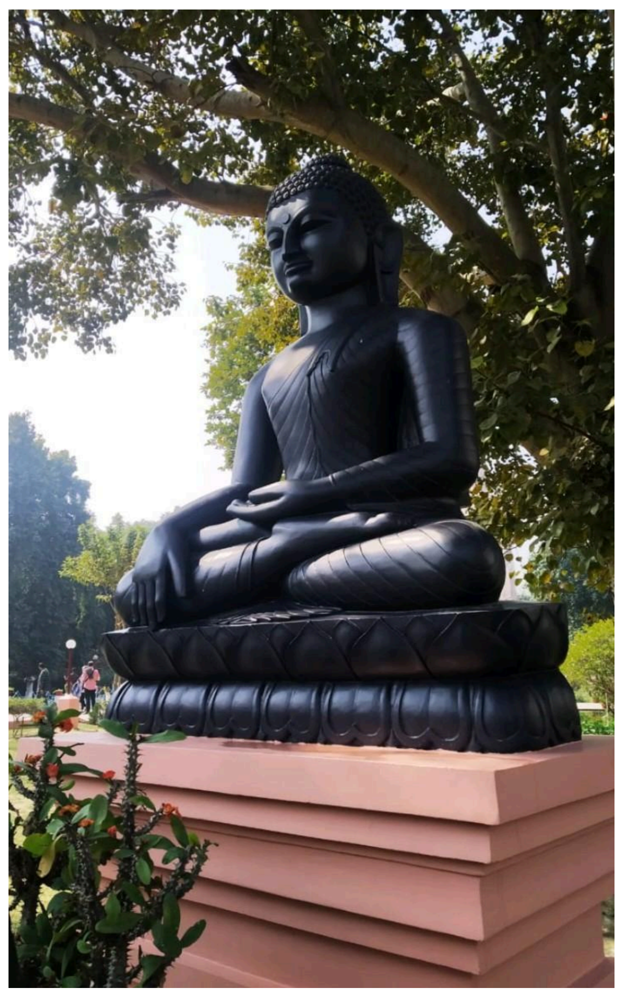

लमही

लमही उत्तर प्रदेश प्रान्त के वाराणसी शहर से 3.7 मील दूर एक छोटा गाँव है। यहाँ महान हिन्दी साहित्यकार प्रेमचंद का जन्म हुआ था।

मुंशी प्रेमचंद का स्मारक

उस लाइब्रेरी के कार्यकर्ता सुरेश चंद्र दुबे ने बताया कि जिस स्थान पर स्मारक विराजमान है उसी जगह प्रेमचंद पैदा हुए थे। उनका कहना है कि इस गांव में अब भी कफन की बुढ़िया, बुढी काकी और निर्मला जैसे किरदार है लेकिन अब उनके दर्द को

इस लाइब्रेरी में बहुत सारी पुस्तक है जो आसानी से नहीं मिलती,प्रेमचंद की हर एक किताब यहा पर मौजूद है। जो प्रेमचंद ने स्वयं अनुभव करके हर इंसान के जिन्दगी के पेहला को उजागर किया है । उनके हर एक कहानियों के पोस्टर सुन्दर तरीके से दीवार पर लटकाये गये है। इस लाइब्रेरी में बहुत सारी पुस्तक है जेसै कि कुत्ते की कहानी , दो बैलों की कथा, परीक्षा, अलगयोझा , बैर का अन्त, चमत्कार आदि।

यह मुंशी प्रेमचंद जी का घर है। जहाँ पर कलम के सिपाही बैठकर कहानियों को रचते थे। उनके घर में बहुत सारे कमरे हैं । इस जगह पर बैठकर ही कहानियों का आरंभ किया।

कबीर

कबीर पंद्रहवीं शताब्दी के संत थे, भक्तिकाल के कवियों में वह प्रमुख रहस्यवादी कवि थे, उनके दोहे सुनने वाले लिख लेते थे या कंठस्त कर लेते थे क्योंकि कबीर अनपढ़ थे, पर ज्ञान का भंडार थें।

एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाँडों के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्त्ति, रोज़ा, ईद, मस्जिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे। कबीर के समय में हिंदू जनता पर धर्मांतरण का दबाव था उन्होंने अपने दोहों में दोनो धर्मो के कर्मकाँडों का विरोध किया और ईश्वर केवल एक है इस बात को तरह से लोगों को सहज भाषा में समझाया।

पर जब हम लहरतारा गयें थे तब कबीर-पंथियों ने उनका एक स्मारक बनाया है जो कबीर के दोहों से परे है। जिन्होंने स्वयं किसी मूर्ति को नहीं माना उन्हें मुर्ति के रुप में विराजमान किया है।

कला दीर्घा

एक आदमी ने हमें बताया कि यहाँ आर्ट गैलरी है,पहले हम राजी नही थे फिर शिक्षक गण ने सोचा कि देख आने में कौनसा हर्ज है और हम उस आदमी के पीछे चले गये। यह आर्ट गैलरी का प्रवेश है पहले हमें लगा कि किसी प्रकार की चित्रकारी होगी परंतु जब अंदर कि तरफ निहारा तो नजारा कुछ अलग था उस आर्ट गैलरी में मजदूर भाई अपने हाथों से सारी बना रहे थे।

इस तरह से सारी बना रहे है अपने हाथों कि कलाकारी से फिर हम अंदर कि तरह देखने चले गये नजारा देखने लायक था हर जगह अलग-अलग किस्म कि कलाकारी कि वस्तुओं का संगठन था।

जब अंदर कि तरफ बढने लगें तो हर तरफ साडियो का डेरा लगा था वो भी सिल्क की साड़ी हर तरफ रंग-बिरंगी साडीया देखकर मन हर्षित हो उठा। मन हो उठा कि यह सब खरीद कर लेकर जाऊं परंतु उसका भाव ज्यादा होने के कारण वह हमारे हित में नहीं था। उसका भाव ज्यादा इसलिए था क्योंकि वह हाथों से बनाईं गयी थी ना कि मशीनों कि सहायता से और शुद्ध सिल्क सिलाई थी। वह देखकर फिर हम अपनी अगली मंजिल पर निकल पड़े ।

घाट

बनारस(वाराणसी) शहर का नामकरण:-

वाराणसी शब्द ‘वरुणा ‘ ओर ‘अस्सी ‘ दो नदी वाचक शब्द के योग से बना है। पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार और ‘वरुणा ‘और ‘अस्सी नाम की नदियों के बीच में बसने के कारण इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा।

वराणसी (काशी)में गंगा तट पर अनेक सुंदर घाट बने हैं। सभी घाट किसी ना किसी पौराणिक या धार्मिक कथा से संबंधित है। बनारसी के घाटो की आकृति धनुष की तरह होने की वजह से बहुत ही मनोहारी लगते है। सभी घाटो के पूर्वाभिमुख होने से दुर्योदय के समय घाटो पर सूर्य कीं पहली किरणे के साथ दस्तज देती है। उत्तर दिशा में राजघाट से प्रारंभ होकर दक्षिण में अस्सी घाट तक सौ से भी अधिक घाट है।

मृनिकीर्णिका घाट पर चिता की अग्नि कभी शांत नही होती क्योकि बनारस के बाहर मरने वालों की अंत्येष्टि पुण्य प्राप्ति के लिए यही की जाती है। कई हिन्दू धर्म के लोग मानते है।कि यहां

बनारस में लगभग सौ से भी अधिक घाट है।

बनारस के घाट 4 में लंबे तट पर बने हैं। इन सो घाट में से पांच घाट तो बहुत ही पवित्र माने जाते हैं इन्हें पंचतंत्र भी कहा जाता है।

(1) अस्सी घाट

(2) दशाश्वमेध घाट

(3) आदि केशव घाट

(4) पंचगंगा घाट

(5) मणिकर्णिका घाट।

हर घाट की अपनी अलग पहचान है वाराणसी के कई घाट मराठा साम्राज्य के अधीनस्थ बनवाए गए थे। जिनमें सिंधिया ,होल्कर, भोसले और पेशवा परिवार शामिल थे वाराणसी के कई घाट तो स्नान के लिए ही है और कुछ घाट अंत्येष्टि के लिए है । वहां के महानिर्वाण घाट में महात्मा बुद्ध ने भी स्नान किया था

गंगा घाट पर हम शाम के वक्त पहुंच गए । पहले हमे लगा कि हम पैदल जाएंगे गंगा घाट पर आरती देखने । परंतु हमे नाव में बैठाकर लेकर चले गए थे। इस बीच हम सभी उसका आनंद ले रहे थे। शाम के वक्त ही नजारा देखने लायक होता है। तो हम सभी बडी वाली नौवका में बैठकर चले गए गंगा घाट की सफारी करने के लिए।

वह मुल्ला हर एक घाट के बारे में बता रहा था कि एक मान्यता के अनुसार माता पार्वती जी का कर्ण फूल यहाँ एक कुंड में गिर गया था, जिसे ढूँढने का काम भगवान शंकर जी द्वारा किया गया, जिस कारण इस स्थान का नाम मणिकर्णिका पड़ गया। एक दूसरी मान्यता के अनुसार भगवान शंकर जी द्वारा माता पार्वती जी के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार किया गया, जिस कारण इसे महाश्मसान भी कहते हैं।

पंचगंगा घाट को पंचगंगा इसलिए कहा जाता है क्योकि इसे पांच नदियों - गंगा, सरस्वती, धुपापापा, यमुना और किरना के संगम पर बनाया गया है। इन पांच नदियों में से

केवल गंगा को देखा जा सकता है, बाकी की चार नदियां पृथ्वी में समा गई। इस घाट को वाराणसी के सबसे पवित्र घाटों में से एक माना जाता है।

समय होने के कारण हम गंगा घाट के उस पार गये थे। उस पार रेती थी हम नीचे नही उतरे नाव से हमने देखा था कि वहाँ पर ऊंट और घोडा की सवारी करने को मिलती है। समय हो गया था इसलिए हम मणिकर्णिका घाट के पास आ गये जहाँ पर आरती शुरू होने वाली थी। सभी मुल्ला अपनी नाव की सवारियों को लेकर वह पुजा दिखाने छटपटाता रहे थे। सभी वह देखने के लिए आये थे। आरती खत्म होने के बाद जो दिये लिए थे उन्हे जल मे छुड दिया और गंगा जल भी लेकर आ गये। सभी नाव वापस घाट की तरफ जा रहें थी। हम सभी ने कुछ सामान खरीदकर वापस हॉटेल चले गये।

बनारस शहर की तीसरी सुबह

रात को हमे सुचित किया कि सुबह सभी को मंदिर जाना है। तो कुछ साडिया पहनकर तैयार हो गयी। परंतु किसी कारण की वजह से मुझे जाने नहीं मिला। वाराणसी में कल प्रमुख मंदिर स्थित हैं प्रमुख मंदिरों का नगर है वाराणसी। हर एक चौराहे पर एक मंदिर है छोटे से लेकर कई बड़े मंदिर है यहां जो अपने समय की इतिहास पर आधारित है। वाराणसी के मंदिर में काशी विश्वनाथ मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर, ढूंढ़ीराज गणेश, तुलसी मानस मंदिर, इस तरह देखे तो बहुत ही सुंदर बने आकर्षित मंदिर बनारस में है ।जो अपने इतिहास को जाहिर करते हैं।

मंदिर में जाते वक्त लिया हुआ फोटो

वाराणसी में कल प्रमुख मंदिर स्थित हैं प्रमुख मंदिरों का नगर है वाराणसी। हर एक चौराहे पर एक मंदिर है छोटे से लेकर कई बड़े मंदिर है यहां जो अपने समय की इतिहास पर आधारित है। वाराणसी के मंदिर में काशी विश्वनाथ मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर, ढूंढ़ीराज गणेश, तुलसी मानस मंदिर, इस तरह देखे तो बहुत ही सुंदर बने आकर्षित मंदिर बनारस में है ।जो अपने इतिहास को जाहिर करते हैं।

रामगढ किला पर हम गये परंतु किसी की इच्छा नहीं हुई उसे देखने की इस वजह उसका नजारा देखकर ही आ गये। बाद मे कुछ खाने के लिए वही पर रुक गये तभी हमने देखा की वहाँ के लोग एक शव को लेकर जाते वक्त नाच रहे। यह देखकर थोडा अजीब लगा। पर वो वहाँ की परंपरा है।

भारत कला भवन, वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित एक चित्रशाला है। यह एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय संग्रहालय है। यहां की चित्र वीथिका (गैलरी) में 12वीं से 20वीं शती तक के भारतीय लघु चित्र प्रदर्शित हैं। इनके चित्रण में

ताड़ पत्र, कागज, कपड़ा, काठ, हाथी दांत आदि का उपयोग किया गया है। प्रदर्शित चित्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रकाशित करते हैं।

इन दुर्लभ कलाकृतियों की जोड़ दुनिया के चर्चित संग्रहालयों में भी देखने को नहीं मिलती। इस संग्रहालय में कार्तिकेय, शेख फूल, हम्जानामा, प्रसाधिका, औरंगजेब का फरमान, बीदरी के बर्तन और मुगल ग्लास जैसी दुर्लभ भारतीय कलाकृतियां शामिल हैं। इस महत्वपूर्ण कला संग्रहालय में एक लाख से ज्यादा कलाकृतियां संग्रहीत हैं जिनमें सिक्के, मूर्तियां, टेराकोटा, चित्र, पोर्टेट, धातु के पुराने गहने और पाण्डुलिपियां, सोने की मुहरे, मनके, महत्वपूर्ण दस्तावेज, साहित्यिक वस्तुओं के साथ ही विश्व के श्रेष्ठतम भारतीय लघु चित्रों को भी संग्रहीत किया गया है। भारत कला भवन में संग्रहित महत्वपूर्ण सामग्रियों का विवरण इस प्रकार है-चित्र- संग्रहालय में दसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक के चित्रों का संग्रह है।

इसमें भारतीय चित्रकला की सम्पूर्णता दिखाई पड़ती है। संग्रह में पूर्वी भारत के चित्रित बौद्ध ग्रन्थ, पश्चिमी भारत के चित्रित जैन ग्रन्थ तथा कतिपय अन्य चित्रित ग्रन्थ और लोर चन्दाए चैर पंचशिका, मृगावत, पूर्व व प्रारम्भिक मुगलकालीन शाहनामा, मुगल सम्राट अकबर, जहांगीर, शाहजहां तथा अन्य मुगल कालीन सम्राटों के समय के अनेक दुर्लभ लघुचित्र यहां उपलब्ध हैं। ये चित्र राजस्थान के मेवाड़ बूंदी, कोटा, किशनगढ़ बीकानेर, जयपुर नाथद्वारा, बसोहली, गुलेर, कांगड़ा, विलासपुर गढ़वाल के पहाड़ी शैली के साथ ही पटना, बनारस, अवध तथा दक्षिणी क्षेत्र के कम्पनी शैली के हैं। इस संग्रहालय में बीसवीं सदी के प्राख्यात चित्रकारों अवनिन्द्र नाथ ठाकुर, गगनेन्द्रनाथ, नन्दलाल, यामिनी राय, शैलेन्द्र डे, राम गोपाल विजयवर्गीय एवं अन्य समकालीन चित्रकारों के चित्र भी संरक्षित हैं। मूर्ति- कला भवन के मूर्तियों का संग्रह अत्यन्त समृद्ध है। यहां मौर्य काल (लगभग तीसरी शताब्दी ई0पू0द्ध से लेकर तेरहवीं, चैदहवीं शताब्दी तक की मूर्तियां संग्रहीत हैं।

इनमें भरहूत से प्राप्त निमिंगल जातक, फैजाबाद से मिली प्रसाधिका (द्वितीय शताब्दी ई.) आन्ध्र से प्राप्त नलगिरी विजय (द्वितीय शताब्दी ई) बनारस से प्राप्त कार्तिकेय (पांचवी सदी ई) शाहाबाद, बिहार से प्राप्त इन्द्राणी (छठवीं शदी ई) एटा से प्राप्त कल्याण सुन्दर मूर्ति, शिवविवाह एवं नटराज की प्रतिमा अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।
कलाभवन के वसन विभाग में सूती, रेशमी तथा ऊनी वस्त्रों का विषाल संग्रह है जिसमें बनारसी किमखाब तथा कश्मीरी शाह, विशेष उल्लेखनीय हैं। हथकरघे पर बनी मिश्रित कशीदाकारी वाले कश्मीरी शाही तूश की शाल अपने आप में अद्वितीय है।
मृणमूर्ति- मिट्टी की पुरानी मूर्तियों के संग्रह में हड़प्पा काल से लेकर अठारहवीं और उन्नसवीं शती तक की वस्तुयें संग्रहित हैं। भारत कला भवन गंगा के मैदानी भाग में मिलने

वाली मूर्तियों के संग्रह के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इनमें मृदंग वादक, शिव मस्तक एवं झूला झलती युवती विशेष उल्लेखनीय हैं।

मुद्रायें- कला भवन में मुद्राओं का भी समृद्ध संग्रह है। यहाँ थलाई से (पीटकर) बनी मुद्रायें, ढलकर बने ताँबे के सिक्के, इण्डो ग्रीक शासकों के सिक्के, कुषाण एवं गुप्तकालीन स्वर्ण एवं रजत मुद्रायें तथा दिल्ली सुल्तान एवं शासकों के सिक्के उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश एवं भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये आधुनिक सिक्के भी रखे गए हैं।

खरीदार

खरीदारी करने के लिए हम दो दिन गये थे। पहले दिन गये थे तब हमे वही पर 9 से ज्यादा बज गये थे। बहुत सारी खरेदरी करके आये थे। सभी अपने परिवार के लोगों के आलावा भी अपने दोस्तों को ले रहे थे। मैंने तो छोटो से बडे तक कुछ न कुछ लिया था। भगवान का प्रसाद और मिठाई खरीदी थी। दोस्तों के लिए बनारसी दुपट्टा लेकर आये थे। मां के लिए सभी ने साडीया ले ली थी । दुसरे दिन भी हम और प्रसाद और मिठाई लाने के लिए गये थे। हमारी सहेली का फोन किसी ने खरीदी करते वक्त निकाला 14 तारीख दोपहर को हम बनारस से गया के लिए निकले बस का प्रबंध किया था। उस दिन बस मे सवारी करके

बाहर का नजारा देख रहे थे। पुरी रात हमने बस में ही निकाली। उस दिन रात का खाना भी हमने एक ढाबे पर खाया और पुरी रात हमने बस में ही काट और सुबह एक सार्वजनिक शौचालय मे ताजा होने के लिए थे।

गया

गया, [बिहार] और झारखंड की सीमा और फल्गु नदी के तट पर बसा भारत के बिहार राज्य का दूसरा सबसे बडा शहर है । वैदिक कीकट प्रदेश के धर्मारण्य क्षेत्र मे स्थापित नगरी है गया। वाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि मुख्य रूप से एक धार्मिक नगरी के रूप में है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ हजारों श्रद्धालु पिंडदान के लिये जुटते हैं।

महाबोधि मंदिर Mahabodhini Temple

यह मंदिर बोधगया के मुख्य आकर्षणों(Main Attractions) में से एक है। इस मंदिर का निर्माण सम्राट अशोक द्वारा करवाया गया था। मंदिर का निर्माण 7 वीं शताब्दी ईस्वी में मूल बोधि वृक्ष के चारों ओर किया गया है।

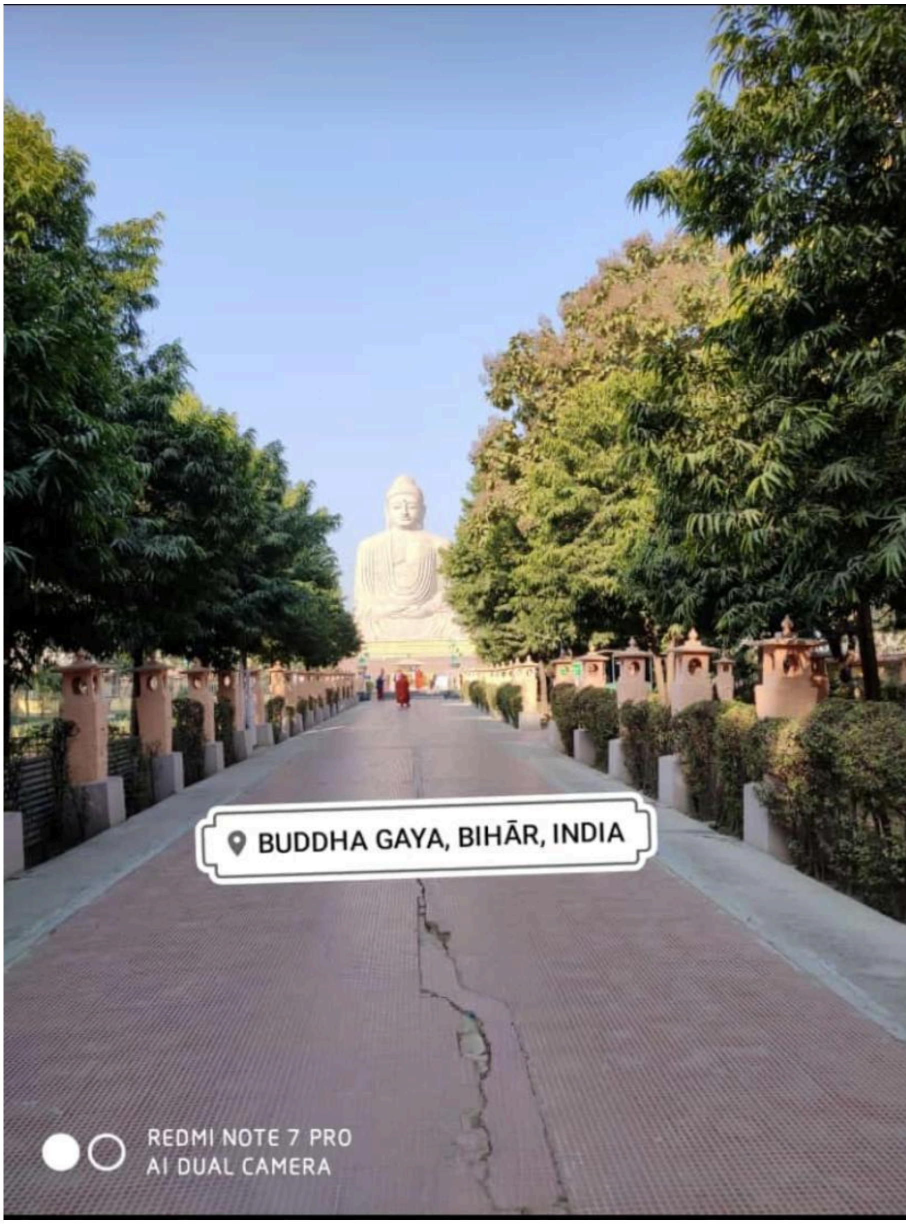

Statue)

वान बुद्ध बोधगया से
सबसे ऊंची बुद्ध
त की गई थी।

जापानी मंदिर(Japanese Temple)

यह मंदिर जापानी वास्तुकला में बना है जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेशों की नक्काशी की गई है। इस मंदिर का निर्माण 1972 में किया गया था। यह शहर से 15 किमी की दूरी पर स्थित है।

नालंदा विश्वविद्यालय

जब हम नालंदा विश्वविद्यालय पहुँचें तो वहाँ के मार्गदर्शक ने ऐसा ही कहाँ था। शिक्षा के मामले में आज भले ही भारत दुनिया के कई देशों से पीछे हो, लेकिन एक समय था, जब हिंदुस्तान शिक्षा का केंद्र हुआ करता था। भारत में ही दुनिया का पहला विश्वविद्यालय खुला था, जिसे नालंदा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त काल के दौरान पांचवीं सदी में हुई थी, लेकिन सन् 1193 में आक्रमण के बाद इसे नेस्तनाबूत कर दिया गया था।

बिहार के नालंदा में स्थित इस विश्वविद्यालय में आठवीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच दुनिया के कई देशों से छात्र पढ़ने आते थे। इस विश्वविद्यालय में करीब 10 हजार छात्र पढ़ते थे, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा कोरिया, जापान, चीन, तिब्बती, इंडोनेशिया, फारसी और तुर्की से आते थे। यहां करीब दो हजार शिक्षक पढ़ाते थे।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक कुमार गुप्त प्रथम (450-470) ने की थी। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी, लेकिन अब यह एक खंडहर बनकर रह चुका है, जहां दुनिया भर से लोग घूमने के लिए आते हैं।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का एक अद्भुत नमूना है। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस विश्वविद्यालय में तीन सौ कमरे, सात बड़े-बड़े कक्ष और अध्ययन के लिए नौ मंजिला एक विशाल पुस्तकालय था, जिसमें तीन लाख से भी अधिक किताबें थीं।

सन् 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को जला कर पूरी तरह से नष्ट कर दिया। कहते हैं कि यहां के पुस्तकालय में इतनी किताबें थीं कि पूरे तीन महीने तक आग धधकती रही थी। इसके अलावा उसने कई धर्माचार्य और बौद्ध भिक्षुओं को भी मार डाला था।

उस दिन गया और नालंदा विश्वविद्यालय देखने के बाद हम पटना आयें परंतु हॉटेल वाला बहुत देर होनी के कारण आने से मना कर रहा था। इसलिए हमे हॉटेल बदलना पडा। परंतु हमारी एक सहेली का बैग बस में ही रह गया । एक कमरे में हम 7 लोगों को रहना पडा। खाने का इंतजाम करवाया था । सुबह होकर हम चाय लेने के लिए बिहार चले गये और उसी दिन हम सुबह पटना से गोवा के ट्रेन में बैठ गये। उसी दिन रात के समय सर का फोन किसी ने चुरा लिया। पछतावे के बिना हम और क्या कर सकते हैं। हम घर जाने के लिए बेकाबू थे। सुबह के 8 बजे हम थिवी रेल्वे स्टेशन पहुंच गये। वहाँ पर सभी के माता-पिता वहाँ उपस्थित थे परंतु मैंने किसी को मेरे आने के बारे मैं नही बताया था घर पर पहुँचकर सब को तोहफा देना था और ऐसा ही हो गया। इस तरह से बनारस का यह सफर जिन्दगी भर याद रहेगा।